व्यवहार में आज अपराध एवं दुराचरण आ गया है। व्यक्तियों में कर्तव्य-धर्म आधारित मानव-प्रकृति एवं पारस्परिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से उपजे शुभ एवं सभ्य संस्कारों से अच्छे और बुरे में फर्क करने योग्य विवेक बुद्धि होती है। अतः मानव व्यवहार में इन दो परस्पर विरोधी पक्षों-पहलुओं में एकरूपता व तालमेल के अभाव के कारण दोहरे मानदंडों को अपनाने की विवशता पैदा हो गई है। बुराईयों एवं विवशताजन्य समझौतों को समाज से छिपाने की चारित्रिक दुर्बलता इसी कारण जड़ पकड़ रही है। अपने दोषों की स्वीकारोक्ति के साहस का एक तरफ हममें अभाव है तो दूसरी तरफ आज का सामाजिक वातावरण, सामाजिक संरचना एवं परिस्थितियों में सामाजिक बहिष्कार एवं प्रायश्चित की प्रथा का प्रचलन लुप्तप्रायः है।

इस प्रकार समाज संचालन के दो पहलू है:-

1. पारिवारिक संदर्भो में वैयक्तिक व्यवहार कर्तव्यमूलक हैं।
2. सामाजिक संदर्भो में वैयक्तिक व्यवहार अधिकार मूलक हैं।

इस प्रकार हमें दो भिन्न, विपरीत एवं परस्पर विरोधी मानदंडों के आधार पर जीवन यापन की विवशताएं आ खड़ी हुई हैं। पृष्ठभूमि में हमारी 1200 वर्षो की गुलामी, परावलम्बन से उपजी असुरक्षा, हीनता, निर्बल चरित्र, संघर्ष की सामर्थ्य का, साहस का, निज गौरव का अभाव एवं कायरता से उपजी विनम्रता, हमें दोहरे मापदंड अपनाने की प्रेरणा देकर ढोंगी बना देते हैं। संक्षिप्त में "जो हम नहीं हैं उसे हम बताना चाहते हैं और जैसे हम हैं उसे छिपाना चाहते हैं"। इसका एक सबसे बड़ा कारण है अब तक 1924 का "गोपनीयता का कानून" का अस्तित्व में बने रहना।

फिर हमारे स्वतंत्र भारत के इतिहास का सबसे दुःखद पहलू इसकी अपनी संस्कृति, सहिष्णुता, सभ्यता, भाषा, ग्राम स्वराज्य व्यवस्था, पंच परमेश्वर एवं सामाजिक न्याय व्यवस्था का ह्रास, ओपनिवेशिक काल की गुलामी, पराधीनता से उपजा आज का वर्तमान विजेताओं द्वारा लिखा इतिहास, रोजी-रोटी से जोड़ दी गयी विदेशी भाषा की दासता, विदेशी गुलामी और उनके द्वारा शोषण के लिये विदेशी शासकों द्वारा स्थापित व्यवस्था, कानून एवं संविधान आदि सब कुछ अपने विदेशी शासकों के चश्मे से देखने के लिये अभिशप्त बना दिये गये हैं। जो हमें अंग्रेज शासकों ने बताया व पढ़ाया, उसे ही हम प्राथमिक आधार मानकर आज भी समाज का शासन चला रहे हैं व बच्चों को सिखा-पढ़ा रहे हैं।

इस प्रकार समाज संचालन के दो क्षेत्रों के लिये एक आदर्श मानदंड की बजाय दो परस्पर विपरीत व विरोधी मानदंडों को अपनाने और दोनों के साथ-साथ सामंजस्य बिठाने की विवशता के कारण हम पारिवारिक स्तर पर क्रियाशील, कर्तव्य-उत्तरदायित्वपूर्ण है तो दूसरे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्तर पर कर्तव्य उत्तरदायित्वहीन, कामचोर, भ्रष्ट एवं चरित्रहीन। धर्म व समाज की अथॉरिटी, उसका अनुशासन उसकी आदेशात्मक क्षमता मृतप्रायः कर दी गयी है।

अब तो संपूर्ण विश्व ही मानवाधिकारों पर आधारित संविधानों के कारण, मूल अधिकारों के अंतर्राष्ट्रीय मिथकीय षडयंत्र के चलते ढोंगो को अपनाने को विवश हो विनाश की ओर अग्रसर है।

अतः आज के पथभ्रष्ट एवं दिशाहीन जोश-होश रहित समाज में जन-जन की चेतना में उभरते असंतोष के कारण इस नये जन-आंदोलन के उभरने, विकसित होने एव पूर्णता की ओर उन्मुख, बहुत तेजी से जनसमर्थन हासिल करता, यह जन-आंदोलन, जो एक विश्वक्रांति का स्वरूप लेने की संभावना एवं क्षमता से परिपूर्ण है, को कार्यशील सशक्त राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थाओं एवं मंचों का समर्थन एवं नेतृत्व चाहिये।

हमारी संपूर्ण प्रेरणाओं, क्षमताओं एवं शक्ति के स्रोत, संपूर्ण विश्व मानव समाज को, जन-जन के लोक नेतृत्व, साहस व सामर्थ्य का सहारा चाहिये।

क्या आप व आपकी संस्थायें हमारा व विश्व का नेतृत्व संभालने की क्षमता एवं साहस प्रदर्शित करने एवं अपना उत्तरदायित्व, संपूर्ण विश्व मानव समाज के प्रति, प्रदर्शित करने को तैयार है?